आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711 पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 2 अंक : 8 बीकानेर, अप्रैल, 2015 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से...

पशुपालन में विविधिकरण उपायों से प्राकृतिक आपदाओं में भी सम्बल

राज्य में प्राकृतिक आपदाओं का कहर एक नीयती बन गई है। यह अकाल, भीषण गर्मी, अल्प वर्षा अथवा अतिवृष्टि के रूप में सामने आती रहती है। इस बार बे–मौसम की वर्षा और ओलावृष्टि से खेतों में पकी हुई, खड़ी फसल को नुकसान पहुंचा है। ये नुकसान ऐसे समय हुआ है जब फसल या तो कटने की कगार पर थी या फिर खेत पर कटाई करके सुखाई हुई थी। प्राकृतिक आपदाओं पर किसी का वश नहीं है। शासन–प्रशासन ने कृषक और पशुपालक समुदाय को राहत के उपाय शुरू कर दिए हैं। कृषि और पशुपालन एक दूसरे के पूरक हैं। राजस्थान के कृषक विपरीत जलवायु परिस्थितियों और प्रतिकूल समय में हमेशा पशुपालन के सहारे मजबूती के साथ खड़ा रहा है। पशुपालन ने सदैव इसे एक संबल प्रदान किया है। हमें इसकी उपयोगिता और महत्व को समझकर पशुपालन की ओर तेजी से बढ़ना चाहिए क्योंकि खेती–बाड़ी के मुकाबले इसमें जोखिम कम है तथा यह हमारी आजीविका का एक स्थाई और भरोसेमंद जरिया है। पशुपालन में विविधिकरण समय की मांग है। पारंपरिक पशुपालन के तौर–तरीकों में समय के साथ आवश्यक बदलाव करके अधिक लाभ कमाया जा सकता है। कृषि में विविधिकरण उपायों को तेजी से अपनाने के सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं। कृषकों ने कृषि उपजों के साथ– साथ सब्जी, बागवानी, फूलों की खेती, खजूर व जैतून जैसे विविधिकरण को अपनाया है। पशुपालन में विविधिकरण को लागू करके अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। पशुपालन में खरगोश, एमू, देशी मुर्गी, बतख पालन के साथ ही मछली, टर्की, जापानी क्वेल प्रजातियों का पालन किया जा सकता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में पशुपालन में नई तकनीक के समावेश से पशु उत्पादन बढ़ेगा, तथा इससे कृषि और पशुपालन पर कृषकों की निर्भरता सुदृढ़ और निश्चित की जा सकेगी। प्राकृतिक आपदाओं जैसे मुश्किल समय में पशु विविधिकरण से पशुपालकों को सम्बल मिलेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय पशुपालन में विविधिकरण को आम लोगों और पशुपालकों तक पहुंचाने के लिए अनेकों योजनाओं और जैव पशु विविधिकरण प्रदर्शन इकाईयों का क्रियान्वयन कर रहा है। कृषकों और पशुपालक समुदाय को प्रेरित करने के लिए विश्वविद्यालय के बीकानेर परिसर में पशु विविधिकरण के एक सजीव म्यूजियम की स्थापना की जा रही है। ऐसे ही सजीव म्यूजियम विश्वविद्यालय के जयपुर और उदयपुर परिसरों में भी स्थापित किये जाने के प्रयास जारी हैं। विभिन्न जिलों में स्थापित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से पशुपालन में विविधिकरण उपायों पर गांवों में वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इससे विविधिकरण के प्रति पशुपालकों का विश्वास और मन बनाने में मदद मिलेगी।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

WORLD VETERINARY DAY 2014

Saturday, 25 April 2015

विश्व पशुचिकित्सा दिवस के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई। हम नीले अम्बर में पशुचिकित्सा जैसे पवित्र पेशे की बढ़ोतरी की मशाल सदैव रोशन रखें। आइए हम सब अपने पेशे के प्रति पूर्ण समर्पण की प्रतिज्ञा करें।

-प्रो. ए. के. गहलोत

मुख्य समाचार

सांवराद में गायों में नस्ल संरक्षण का प्रशिक्षण शिविर

बीकानेर। वीयूटीआरसी बाकलिया जिला नागौर द्वारा गांव सांवराद में देशी गायों में नस्ल सरंक्षण व सुधार विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 3 मार्च को किया गया। केन्द्र प्रभारी ने बताया कि राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में वही नस्लें अच्छा उत्पादन दे सकती हैं जिनमें भीषण गर्मी सहन करने की क्षमता हो तथा जो पेयजल की कमी व हरे चारे की अनुपलब्धता की स्थिति को सहन करने में सक्षम हो। इन कारणों से गिर, थारपारकर जैसी मजबूत देशी नस्लों का पालन लाभकारी सिद्ध हो सकता है।यदि पशुपालक सूझबूझ से वैज्ञानिक प्रबंधन करें और संतुलित आहार दें तो देशी नस्लों से अधिक दुग्ध उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। शिविर में भ्रूण संरक्षण व नस्ल सुधार की भी जानकारी दी गई।

गांव छपारा (लाड़नू) में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र बाकलिया द्वारा गांव छपारा में ''दुधारू पशुओं हेतु खनिज मिश्रण की उपयोगिता'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 7 मार्च को आयोजित किया गया। सहायक आचार्य एवं प्रभारी अधिकारी डॉ. कमल पुरोहित ने पशुपालकों को बताया कि समुचित खनिज पोषण मिलने पर पशु की प्रतिरोधक क्षमता, प्रजनन क्षमता व दुग्ध उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है तथा खनिज मिश्रण से भोजन के उपापचय की क्षमता बढ़ती है। शिविर में 40 पशुपालकों ने भाग लिया।

पूसा कृषि विज्ञान मेला-2015
विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी को मिला प्रथम पुरस्कार

बीकानेर। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा पूसा,नई दिल्ली में 10–12 मार्च 2015 को आयोजित पूसा कृषि विज्ञान मेला–2015 में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास की प्रदर्शनी स्टॉल को 250 स्टालों में से प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। मेले में राष्ट्रीय स्तर के कई संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों एवं विभिन्न निगम, बोर्डो ने भाग लिया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री डॉ. संजीव बाल्यान ने प्रथम पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में डॉ. एस. अयप्पन महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् व डॉ. रविन्द्र कौर, निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा भी उपस्थित थे। इस प्रदर्शनी में पशुपालन क्षेत्र में नवीन तकनीक और राज्य के पशुधन समृद्धि एवं विकास के लिए किये जा रहे कार्यों को मॉडल और चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में चारा संरक्षण की साइलेज तकनीक, पशुआहार की सम्पूर्ण फीड ब्लाक, चारा तैयार करने की हाइड्रोपोनिक्स तकनीक, ऊंटों में इंटर डेंटल वायर तकनीक आदि की जानकारी पशुपालकों एवं किसानों को दी गई।

स्वच्छ दूध उत्पादन पर पषुपालक प्रषिक्षण

बीकानेर। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र बाकलिया (नागौर) द्वारा गांव गुणपालिया में 17 मार्च को स्वच्छ दूध उत्पादन महत्व पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. कमल पुरोहित ने पशुपालकों को बताया कि गाय का दूध विश्व का सर्वोत्तम भोज्य पदार्थ है, इसे सम्पर्ण आहार कहा जाता है। स्वच्छ दूध का अर्थ बाहरी पदार्थो जैस धूल, गोबर, बाल, मक्खी आदि से मुक्त दूध ही नहीं अपितु बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं व सूक्ष्म जीवों से रहित होना है। शिविर में स्वच्छ दूध उत्पादन की वैज्ञानिक प्रक्रिया व मूलभूत नियमों की जानकारी पशुपालकों को प्रदान की गई। इसमें 35 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु जैव विविधता संरक्षण पर पशुपालकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र में "पशु जैव विविधता संरक्षण एवं वर्तमान परिपेक्ष्य में पशु जैव विविधता के महत्त्व" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रो. बी.आर. छीपा, कुलपति, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं प्रो. ए.के. गहलोत, कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रो. छीपा ने पशुपालकों से उन्नत तकनीक को अपनाने पर जोर दिया जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो सके। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि जिस प्रकार कृषि के क्षेत्र में कृषकों ने विविधिकरण को अपनाया है, उसी प्रकार पशुपालन के क्षेत्र में भी विविधिकरण को अपनाने की आवश्यकता है। पशुपालन में विविधिकरण के तहत एमू, देशी मुर्गी, बतख, टर्की, मछली, जापानी क्वेल, खरगोश इत्यादि प्रजातियों का पालन किया जा सकता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में पशुपालन में नई तकनीकों के समावेश से पशु उत्पादन बढ़ेगा तथा कृषि व पशुपालन पर किसान की निर्भरता सुदृढ़ होगी। प्रशिक्षण में लगभग 60 पशुपालकों ने भाग लिया।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु जैव रसायन विभाग

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में पशु जैव रसायन विभाग अपने परिवर्तित विभाग पशु शरीर क्रिया एवं पशु जैव रसायन विभाग से विभक्त होकर वर्ष 2000 से स्थापित है। पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान में जैव रसायन विषय एक महत्वपूर्ण अंग है तथा पशु रोग चिकित्सा और निदान का सशक्त आधार है। विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों को जैव–रसायन संघटक, क्रियाएं एवं निदान में आवश्यक जैव रसायन घटकों का विस्तृत अध्ययन सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक स्तर पर करवाया जाता है। विभाग में वर्ष 2000 से योग्य संकाय सदस्यों के निर्देशन में 16 विद्यार्थियों ने उच्च स्तरीय अध्ययन कर सरकारी सेवा में महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहे हैं। जैव रसायन विषय बुनियादी अनुसंधान एवं शिक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। यह विषय अन्य पशु विज्ञान शिक्षा क्षेत्रों– पैथोलॉजी, सूक्ष्मजीव विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, औषध विज्ञान, पशु पोषण विज्ञान इत्यादि में अनुसंधान हेतु महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। जैव रसायन विभाग वर्तमान में विभिन्न अति–आधुनिक उपकरणों जैसे–स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, सेमी ऑटोएनालाइजर, क्रोमैटोग्राफी इत्यादि से सुसज्जित हैं, एवं भविष्य में इसे उच्च स्तरीय लैब बनाने के प्रयास जारी है।

विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्ययन हेतु स्मार्ट क्लासेज दृश्य–श्रव्य उपकरणों की सहायता से आयोजित की जाती है। विभिन्न विभागों के शोधरत विद्यार्थी उच्च स्तरीय प्रायोगिक अध्ययन हेतु जैव रसायन विभाग में आते रहे हैं। इस विभाग में योग्य प्राध्यापकों के निर्देशन में विद्यार्थियों ने कई महत्वपूर्ण विषयों में शोध पूर्ण किये है जैसे–मारवाड़ी भेड़ों में प्रेरित व प्रायोगिक गलग्रंथि अल्पक्रियता (हाइपो थाइरॉइडीस्म) की स्थिति में होने वाले जैव रसायनिक परिवर्तन, गर्दभों व खचरों में रक्त जैव रसायनिक सूचकांक पर भार का प्रभाव, जर्मन शेफर्ड श्वान में यांत्रिक कार्य मापक यंत्र (ट्रेड मिल) पर व्यायाम द्वारा दृष्टिगत प्रभावों को निर्धारित करने वाले जैस रसायनिक चिन्हित घटकों का अध्ययन, अदुग्धदायनी एवं दुग्धदायनी थारपारकर गौवंश में कुछ महत्वपूर्ण जैव रसायनिक घटकों का अध्ययन, अगर्भित एवं गर्भित थारपारकर गौवंश में कुछ महत्वपूर्ण जैव रसायनिक घटकों पर गर्भित अवस्था के तनाव का अध्ययन, इत्यादि। पशु जैव रसायन विभाग में किये गये उच्च स्तरीय अनुसंधान का प्रकाशन देश–विदेश की विभिन्न वैज्ञानिक पत्रिकाओं में हुआ है। भविष्य में विभाग में नवीनतम आणविक जीव विज्ञान तकनीक और पुनः संयोजक डीएनए प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शोध हेतु कार्य योजना है।

आईसीएआर- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243 122 (उ.प्र.) भारत
ICAR - INDIAN VETERINARY RESEARCH INSTITUTE
IZATNAGAR - 243 122 (UP) INDIA

डॉ. आर. के. सिंह
निदेशक

शुभकामना सन्देश

भारत की अर्थव्यवस्था की मेरुदण्ड रहे पशुधन का समस्त विश्व में काफी महत्व है एवं हमारे देश में पशुपालन की परम्परा प्राचीन काल से ही विद्यमान है। विशेषतः भारत के संदर्भ में दूध, दही, छाछ, मक्खन, पनीर, मावा, क्रीम, श्रीखन्ड आदि स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थों को पंचगव्य का स्वरुप माना जाता है। आयुर्वेद के एक श्लोक "जीर्ण ज्वरे मनोरोगे शोथ-मूर्छा भ्रमेषुच, हितं उदाहृतम" का अर्थ है कि पुराने से पुराना ज्वर, मानसिक रोगों, सूजन, बेहोशी और भ्रम अर्थात मस्तिष्क विकारों को दूर करने में गाय का दूध-घी सर्वोत्तम हितकर है। दूध-घी 'आयुष्य' अर्थात आयु बढाने वाला, 'वृष्य' अर्थात पौरुष में वृद्धि करने वाला तथा 'वयः स्थापन्द' अर्थात वय को सुस्थिर करने वाला है। आधुनिक समय में जहाँ भूमि की उर्वरा शक्ति निरन्तर कम होने के कारण कृषकों को लाभ कम हो रहा है, वहीं पशुपालन के क्षेत्र में लगातार नई सम्भावनाओं का उद्भव भी हुआ है। आवश्यकता है तो कृषक भाइयों को इसके प्रति जागरूक बनाने की। इस क्षेत्र में प्रसार शिक्षा का दायित्व अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान सफलतापूर्वक वहन करते आ रहे हैं।

पशुपालक किसानों एवं पशुपालन प्रेमियों का पशुपालन एवं पशु चिकित्सा के वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से परिचय कराने व उनके द्वारा उन्नत पशुपालन को सहर्ष अपनी जीवन शैली एवं जीविका का एक अभिन्न तथा व्यवहारिक अंग बनाने में राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान ने एक अग्रणी व सराहनीय भूमिका निभायी है। इस समर्पित पशुविज्ञान विश्वविद्यालय की उपलब्धियों एवं इसके द्वारा किए गए नवीनतम शोध विषयों से अवगत कराने के साथ-साथ पशुपालक किसानों एवं पशुप्रेमियों को पशु रोग निदान, बचाव, रोकथाम व उपचार की दिशा में ज्ञान देने तथा पशुपालन को एक लाभदायक व्यवसाय बनाने और इसके कुशल प्रबन्धन पर आधारित जानकारी देने में इस विश्वविद्यालय की 'पशुपालन नए आयाम' नामक पत्रिका ने अपना प्रशंसनीय योगदान दिया है।

'पशुपालन नए आयाम' पत्रिका के प्रकाशन के सार्थक एक वर्ष पूर्ण करने पर मैं अपनी तथा इस संस्थान के समस्त परिवार की ओर से इसके प्रेरणा स्रोत - विश्वविद्यालय निदेशक एवं समर्पित सम्पादक मंडल को उनके सार्थक एवं सराहनीय प्रयासों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

[राज कुमार सिंह]

Phone: 0091-581-2300096(O), 2302231 (R) FAX : 0091-581 2303284; E-mail : dirivri@ivri.res.in, directorivri@gmail.com
In the service of nation since 1889

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

गर्दभों में रक्त जैव-रासायनिक सूचकांकों पर भार का प्रभाव

बोझा ढ़ोने वाले गर्दभों (गधों) पर भार से रक्त के जैव रासायनिक घटकों (हिमोग्लोबिन, पी.सी.वी., लाल रूधिर कणिकाऐं और श्वेत रूधिर कणिकाऐं) और (शर्करा, कोलेस्ट्रॉल, यूरिया, लेक्टेट, समग्र प्रोटीन, एल्ब्यूमिन, ग्लोबुलिन और एल्ब्यूमिन ग्लोबुलिन अनुपात) कुछ महत्वपूर्ण विकर (एल.डी.एच. और सी.के.) तथा शारीरिक घटक (रेक्टल तापमान, पल्स दर, श्वसन दर) का सर्वेक्षण किया गया। प्रयोगात्मक रूप से पाया गया कि गर्दभों में उनके कुल शरीर भार का 10 व 20 प्रतिशत भार वहन करने के कारण सीरम एल.डी.एच., क्रिएटनीन काइनेज, लेक्टिक एसिड, यूरिया, कुल प्रोटीन, श्वसन दर, पल्स दर, लाल रक्त कणिकाओं, श्वेत रक्त कणिकाओं, शारीरिक तापमान और पी.सी.वी. में मुख्य रूप से वृद्धि पाई गई। 10 व 20 प्रतिशत भार वहन करने के कारण रक्त शर्करा में अति–महत्वपूर्ण कमी पायी गई। अतः उपर्युक्त शोध का यह निष्कर्ष पाया गया कि भार वहन करने वाले पशुओं में उनकी क्षमता के अनुरूप ही भार वहन किया जाना चाहिए अन्यथा पशु के शरीर के जैव रासायनिक घटकों पर विपरीत प्रभाव देखे गये हैं, जो कि पशु के स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक हैं। बोझा ढ़ोने वाले पशुओं पर उनकी क्षमता से अधिक भार लादना पशुओं के प्रति क्रूरता की श्रेणी में भी आता है।

उपस्थापक – कैलाश चन्द्र डागर, उपादेष्टा – डॉ. अनिल मूलचन्दानी, डॉ. मीनाक्षी सरीन

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-अप्रैल, 2015

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
मुँहपका एवं खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, चुरू, जयपुर, झुंझुनूं सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चित्तौड़गढ़, नागौर, अलवर, हनुमानगढ़, सीकर
गलघोंटू रोग	भैंस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, बूँदी, अजमेर, दौसा, राजसमन्द, झुंझुनूं, बारां, सीकर
ठप्पा रोग	भैंस, गाय	जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, बीकानेर, झुंझुनू, हनुमानगढ़, जालोर
पी.पी.आर. रोग	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, उदयपुर, नागौर, अजमेर
चेचक रोग	बकरी, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, जालोर
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट	धौलपुर, नागौर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, नागौर, धौलपुर
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक
बॉटूलिस्म	गाय	जैसलमेर
कंटेजियस कैपराइन प्लयूरो–न्यूमोनिया	भेड़, बकरी	जयपुर, झुंझुनू, श्रीगंगानगर, बारां
रक्त प्रोटोजोआ अन्तःकृमि	गाय, भैंस	बूँदी, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
गोल–कृमि	गाय, भैंस	बूँदी, चित्तौड़गढ़, सीकर, श्रीगंगानगर
पर्ण–कृमि	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	डूँगरपुर, बूँदी, धौलपुर, भरतपुर, सीकर, बाँसवाड़ा, कोटा, राजसमन्द, हनुमानगढ़

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – प्रो. (डॉ.) बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं प्रो. (डॉ.) अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं प्रो. (डॉ.) ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

बकरी फार्म पर होने वाले प्रमुख प्रबन्धन कार्य

बकरियाँ ज्यादातर समाज के गरीब व कमजोर वर्ग द्वारा पाली जाती है, लेकिन वर्तमान में व्यावसायिक स्तर पर बकरी पालन हो रहा है। अतः बकरियों के प्रबन्धन कार्य की जानकारी होना अति आवश्यक है:

नित्य कार्य :-

1. **बकरी एवं बच्चों का आहार –** बकरी को रोजाना अपने शरीर के भार का 3.5% भाग शुष्क खाद्य की आवश्यकता होती है । बकरी के बच्चे को पैदा होने के 1 घण्टे में कोलोस्ट्रम (गाढ़ा पीला दूध या खीस) पिलाना चाहिए और 3 दिन तक पिलायें। कोलोस्ट्रम में सारे आवश्यक पोषक तत्व,प्रतिरोधी कारक (एन्टीबॉडीज) होते हैं । 2–3 दिन बाद सामान्य दुग्ध पान 3 महिनों तक करायें । इस अवधि में क्रीप आहार हरे चारे के साथ दिया जाता है और 3 से 12 महिने की आयु पर चारे के साथ दाने का मिश्रण देना चाहिए। बकरी को सन्तुलित आहार दें जिसमें बकरी को स्वस्थ रखने, वृद्धि ,उत्पादन कार्य के आवश्यक सभी पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, वसा कार्बोहाइड्रेट ,खनिज लवण और विटामिन सही मात्रा में हों ।
2. **गर्मी की जांच –** जांच सुबह और शाम को करनी चाहिए। गर्मी में आने पर योनि में सूजन और तरल पदार्थ का स्त्राव होता है । ऐसी बकरी का प्राकृतिक या कृत्रिम विधि द्वारा गर्भाधान करवा देना चाहिए ।
3. **बकरी के स्वास्थ्य की देखभाल –** रोजाना स्वास्थ्य की देखभाल अति आवश्यक है। बीमार बकरी खाना कम कर देती है, सुस्त हो जाती है और अलग बैठ जाती है तो उसका उचित इलाज कराया जाना चाहिए ।
4. **दुग्ध निकालना –** सुबह और शाम दो बार दुग्ध निकालना चाहिए । दुग्ध निकालते समय बकरी को साफ स्थान पर बांधें और बर्तन साफ – सुथरा होना चाहिए । दुग्ध निकालने वाले के हाथ साबुन से धुले होने चाहिए और बकरी के थनों को लाल दवा (पोटे. परमेगनेट) के घोल से धोयें और फिर गुनगुने पानी से धोना चाहिए ।

समयानुसार कार्य -

1. **बकरी को पकड़ना और नियंत्रण –** बकरी को पकड़ना थोड़ा मुश्किल है । कान और सींग से नहीं पकड़ना चाहिए । गर्दन और सींग से पकड़ना चाहिए ।
2. **बकरों का बंधियाकरण –** अनावश्यक प्रजनन को रोकने और जल्दी वजन बढ़ने के लिए बंधियाकरण कर देना चाहिए ।

बंधियाकरण की विभिन्न विधियाँ -

बर्डिजो विधि 2. रबड़ के छल्ले द्वारा 3. शल्यक्रिया द्वारा

बर्डिजो विधि – इसमें बकरे की शुक्राणु वाहक नलियों को 2 जगह से दबाया जाता है। इसमें अण्डकोषों को हाथ से पकड़कर थोड़ा बाहर खेंचा जाता है ताकि केस्ट्रेटर के हिन्ज (जोड़) तक नहीं पहुँच पायें ।

3. **खुर काटना –** अनावश्यक वृद्धि को रोकने के लिए समय–समय पर काटा जाता है। बढ़े खुर लंगड़ापन , खुरपका रोग कर सकते हैं । खुरों को तेज धार के चाकू से काटकर रेजमाल से रगड़ देना चाहिए और फिर तारपिन का तेल लगाना चाहिए ।
4. **सींग काटना –** पैदा होने के 10 दिन में सींग रहित कर दें ।
5. **बकरियों की सफाई –** बकरी के बढ़े बालों को थोड़ा काट दें और ब्रश द्वारा बालों की गंदगी साफ कर दें । ब्रश द्वारा बाह्य परजीवियों से बचाव होता है ।
6. **पहचान चिन्ह –** उचित रिकार्ड के लिए पहचान चिन्ह लगाने चाहिए। पहचान चिन्ह लगाने की निम्न विधियाँ है –

(1) गोदना – कान में कोई नम्बर या निशान गोदा जाता है ।
(2) टेगिंग (3) रंगों द्वारा चिन्हित करना (4) कान काटना

7. **डिपिंग –** बकरियों को बाह्य परजीवीनाशक घोल से साल में 2 बार नहलाना चाहिए । डिपिंग से पहले बकरी को पानी पिलायें । डिपिंग में मुंह अन्दर ना जाने दें क्योंकि दवाइयाँ जहरीली होती हैं।
8. **व्यायाम –** जब बकरी को घर या फार्म में ही रखा जाता है और बाहर चरने नहीं भेजते हैं तो उसे थोड़ा व्यायाम कराना चाहिए।
9. **बाड़े के उपकरणों को विसंक्रमित करना –** बाड़े के सभी उपकरण साफ और विसंक्रमित होने चाहिए ताकि कोई बीमारी ना हों और शुद्ध दुग्ध उत्पादन हो सके । उपकरणों को गर्म साबुन के पानी से धोयें और पोंछकर साफ जगह रखें । बकरी को सुबह–शाम ताजा पानी पिलायें । यदि बकरी चरने जाती है तो वहाँ पानी की होदी बनवायें ।
10. **टीकाकरण –** संक्रामक बीमारीयों से बचाने के लिए टीकाकरण किया जाता है –

(1) फड़किया (2) मुंहपका–खुरपका (3) माता रोग।

– डॉ. संजय कुमार, डॉ. विवेक महला, डॉ. सरोज चौधरी,
(मो. 09001303833) राजुवास

विश्व पशु चिकित्सा दिवस पर विशेष
पशु चिकित्सा जगत की नामचीन महिलाऐं

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुओं की देख–रेख एवं प्रबंधन का जिम्मा महिलाओं के सुपुर्द है, फिर भी महिलाओं के संदर्भ में पशु चिकित्सा के व्यवसाय को चुनौती के रूप में देखा जाता है। विश्व पशु चिकित्सा दिवस (अप्रेल माह के अन्तिम शनिवार को मनाया जाता है) के संदर्भ में कुछ महिलाओं के बारे में जानिए :

1. 1889 में प्रकाशित वेटरनरी जर्नल के अनुसार विश्व की पहली महिला पशु चिकित्सक पेरीसिने थी। तत्पश्चात पॉल स्टेफनी क्रूज वजका, ज्युरिक विश्वविद्यालय, यूरोप उनके पद चिन्हों पर चली।
2. भारत की प्रथम महिला पशु चिकित्सक होने का गौरव श्रीमती सक्कूबाई रामचन्द्रन को है, जिन्होनें मद्रास वेटरनरी कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की (1948–52) और अपनी सेवाएं वैज्ञानिक के रूप में भारतीय पशु चिकित्सा संस्थान आई.वी.आर.आई. इज्जतनगर में दी।
3. इसके पश्चात भारत में पुष्पा वरनापारखी एवं अमृता पटेल ने उनका अनुकरण कर नाम कमाया।
4. भारत की महिला पशु चिकित्सकों ने एक संगठन दो अक्टूबर 1985 को त्रिशूर वेटरनरी कॉलेज, केरल में बनाया। उस समय कॉलेज डीन डॉ. अन्नामा जेकब थी जो कि भारत की प्रथम महिला अधिष्ठाता थी।

डॉ. बरखा गुप्ता, डॉ. सुनीता पारीक एवं डॉ. हिना अशरफ वाइज
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां(उदयपुर)

पशुओं में पाइका रोग की पहचान एवं बचाव का प्रबंधन कैसे करें ?

पशुओं में पाइका रोग होने पर पशु चारे–बांटे के अतिरिक्त अन्य वस्तु खाने/चबाने अथवा चाटने का प्रयास करता है जिसमें लकड़ी खाना, पेड़ की छाल को खाना, दीवारें चाटना, पत्थर खाना, मिट्टी खाना, जूते–चप्पल, कपडे इत्यादि खाना एवं खुद अथवा दूसरे पशु का पेशाब पीना प्रमुख है। वास्तव में यह कोई रोग नहीं है बल्कि एक लक्षण है जो कि पशु में लवण की कमी अथवा अन्तःपरजीवियों के कारण उत्पन्न होता है। पाइका रोग होने पर पशु कमजोर हो जाता है तथा उत्पादन में भी भारी कमी होती है। छोटे बच्चों की बढ़ोतरी रूक जाती है। पशुओं में पाइका की स्थिति लम्बे समय तक चलने पर पशु उपयोग लायक नहीं रहता है और कुछ समय बाद विशेष रूप से बच्चों की मृत्यु भी हो सकती है। पशुपालक को चाहिए कि यदि पाइका रोग के लक्षण उनके पशुओं में हो तो तुरंत प्रभाव से इसका प्रबंधन करें। पाइका रोग का इलाज अथवा इससे बचाव के लिए पशुओं को संतुलित मात्रा में चारा–बांटा दिया जाना चाहिये। चारे–बांटे के साथ ही लवण–मिश्रण जिसमें सोडियम, फॉस्फोरस, कॉपर और कोबाल्ट प्रचुर मात्रा में हो, का प्रयोग करना चाहिए। पशुपालक को अपने पशुओं का कृमिनाशक दवाई पिलाकर भी इस रोग से बचाने का प्रबंध करना चाहिए। कृमिनाशक दवाई पिलाने में पशुपालक यह ध्यान रखें कि सभी छोटे–बड़े पशुओं को एक ही दिन दवाई पिलाई जाये एवं पशुचिकित्सक की निगरानी में दवाई की मात्रा का निर्धारण किया जाये। साल में दो बार कृमिनाशक दवाई पिलाना पर्याप्त रहता है और हर बार एक जैसी ही दवा न दी जाये क्योंकि बार बार एक जैसी कृमिनाशक दवा बेअसर हो जाती है। पशुपालक यह भी सुनिश्चित करें कि मृत पशु, हड्डी, चमड़ा, कंकाल आदि पाइका ग्रसित पशुओं की पहुंच तथा चारागाहों से दूर रहें। ऐसे स्थानों की तारबंदी/बाडबंदी कर पाइका से ग्रसित पशुओं को रोका जाना चाहिए क्योंकि मृत पशु के अवशेषों को खाने/चबाने से पशुओं में ''बोचूलिज्म'' नामक प्राण–घातक रोग भी हो सकता है जिससे पशु की तुरंत मृत्यु भी हो सकती है।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

सर्रा रोग एवं रोकथाम

यह लगभग सभी पशुओं में पाया जाने वाला गंभीर संक्रामक रोग है जो ट्रिपेनोसोमा इवान्साई नामक प्रोटोजोआ के कारण फैलता है। इसमें रोगी को एनीमिया, तेज बुखार, शारीरिक रूप से काफी कमजोर हो जाता है ''सर्रा'' का अर्थ है सड़ा हुआ। यानी इस रोग में पशु दुर्बल व जर्जर हो जाता है। भारत में यह सभी पालतू व जंगली जानवरों में पाया जाता है। घोड़ों व कुत्तों में इस रोग के लक्षण एकाएक प्रकट होते है जिसमें काफी पशुओं की मौत हो जाती है। ऊंटों व हाथियों में लम्बे समय तक चलता है। ऊंटों में लगभग तीन वर्ष तक चलता है, इसी कारण इसे ''तिबरसा रोग'' कहते हैं। गाय, भैंसों में यह हल्के प्रकार का होता है लेकिन कई बार तेज घातक सर्रा भी इनमें देखा गया है। भारत में सर्वप्रथम ब्रिटेन के पशु चिकित्सक जी इवान्स ने सन् 1880 में इसकी खोज की थी और उन्हीं के नाम पर इस परजीवी का नाम ट्रिपेनासोमा इवान्साई पड़ा। सर्रा रोग गर्म व नमी वाले क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है। बरसात के दौरान व बाद में उमस के वातावरण (अगस्त से सितम्बर) में रोग का प्रकोप अधिक होता है। हालांकि छिटपुट रोगी पूरे साल देखे जाते हैं। यह रोग टेबेनस, स्टोमोक्सिस हिमेटोपोटा प्रजाति की मक्खियों के काटने से फैलता है। इन मक्खियों ट्रिपेनोसोमा इवान्साई परजीवी के जीवन चक्र की कोई भी अवस्था पूरी नहीं होती है। प्रायः मक्खियां काटने या खून चूसने के लिए जल्दी–जल्दी एक से दूसरी जगह कई पशुओं पर बैठती है और इसी दौरान वे रोग फैलाती जाती है।

लक्षण– सामान्य हल्के प्रभाव में पशु सुस्त व कमजोर, हल्का बुखार, एनीमिया, लार गिरना, दांत पिसना, बार–बार गोबर व मूत्र करना। पैरों में कमजोरी, लड़खड़ाना, गोल घेरे में चलना, निढ़ाल हो मुंह पेट की ओर कर बैठना। भैंस के कटड़ों में आंखों से गीड़ आते हैं। पेट व गालों के नीचे सूजन। गाय भैसों में एक्यूट फॉर्म में एकाएक प्रकोप होने पर तेज फीवर, आंखे लाल व जीभ में सूजन तथा लगभग 5 दिन में अधिक छोटे व कमजोर पशुओं की मौत हो जाती है। मौत से पहले तापमान सबनार्मल हो जाता है। घोड़ों में जब एकाएक बहुत तेज प्रकोप होता है तो फीवर, पेट व पैरों पर अडिमा होने से घोड़ों की मौत हो जाती है।उपचार– दवा (मेलाथियोन 0.5% स्प्रे) छिड़काव द्वारा काटने वाली मक्खियों पर यथासम्भव नियंत्रण करें। समय समय पर पशुओं के खून की जांच हो जो सर्रा रोग के लिए पॉजेटिव मिलें, उन्हें अन्य पशुओं से अलग कर तुरन्त इलाज करवाऐं। जिस क्षेत्र में रोग प्रकोप की संभावना अधिक हो वहां हर वर्ष बारिश के दिनों में बचाव हेतु एंट्रीसाइड प्रोसाल्ट इंजेक्शन लगाया जाना चाहिए।

डॉ. पुष्पा, पशु चिकित्सालय, केलां, बीकानेर
डॉ. अनिता (9660205368) पशु चिकित्सालय, कारी, सीकर

भेड़-पालन ने बनाया आत्म निर्भर

सफलता की कहानी

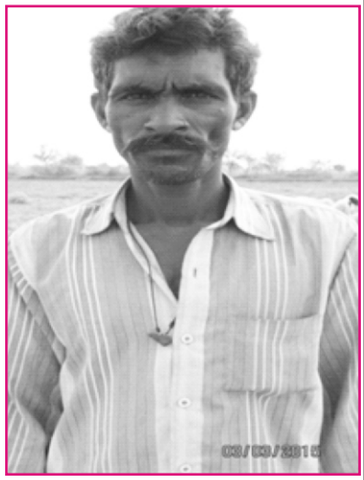

खेती–बाड़ी व पशुपालन प्राचीन काल से ही भारतीय ग्रामीणों की आय का मुख्य स्त्रोत है। गरीब व अशिक्षित किसान भी पशुपालन के द्वारा अपनी आजीविका भली–भांति चला सकते हैं। इसी का उदाहरण नागौर जिले में लाड़नू तहसील के सांवराद गांव में रहने वाले 35 वर्षीय नंदाराम मेघवाल ने प्रस्तुत किया है। भेड़ पालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाकर सफलता प्राप्त की। मात्र 15 वर्ष की आयु में ही परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण लोगों की भेड़–बकरियां चराने का काम शुरू किया। यहीं से भेड़ पालन की प्रेरणा मिली। छोटे स्तर पर एक–दो जानवरों से शुरूआत की। वर्तमान में इनकी स्वंय की 80 भेड़ें जिसमें नर–15 व मादा–65 के साथ साथ 20 बकरियां एवं 3 गायें हैं। यह 20 वर्षो की कड़ी मेहनत व अथाह परिश्रम का परिणाम है। प्रत्येक चार माह के अंतराल में ये 40–45 किलो ऊन का उत्पादन करते हैं जिसे सीकर ऊन मण्डी में बेचते हैं। पारिवारिक आवश्यकता की पूर्ति के बाद बचे हुए दूध को बेच कर आय प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही प्रत्येक मेमने के लिए 2500 रू. तथा भेड़ के लिए 2500 से 3000 रू. तक की आय प्राप्त होती है। ये अपनी भेड़ बकरियों की देखभाल स्वंय करते हैं, तथा पशुओं के खान–पान व स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (लाड़नू) द्वारा समय समय पर दिये जा रहे पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में जाकर भेड़–बकरियों के वैज्ञानिक प्रबंधन से सम्बन्धित जानकारी एवं भेड़–बकरियों में होने वाले रोगों से बचाव व टीकाकरण के विषयों में पूर्ण जानकारी प्राप्त करते हैं। नंदाराम अपनी सफलता का आधार भेड़पालन को मानते हुए इसको आज भी अपना प्रमुख व्यवसाय बना रखने के लिए कटिबद्ध हैं।

सम्पर्क-नंदाराम
(मो. 09649323673)

पशुपालकों के विकास का आधार : उत्तम पोषण, प्रजनन व रखरखाव

भारत वर्ष की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में पशुपालन का महत्वपूर्ण स्थान है। एक कुशल पशुपालक वह है जो पशु की क्षमता को ध्यान में रखते हुए उससे अधिकतम उत्पादन ले लेता है। अधिकतम उत्पादन हेतु पशु को उत्तम पोषण, उन्नत प्रजनन सुविधाएं व उत्तम रखरखाव आवश्यक है। भारत के ग्रामीण अंचलों में सभी पशुओं को ऐसी परिस्थितियां नहीं मिल पाती जिसका स्पष्ट प्रभाव उत्पादन क्षमता पर पड़ता है। पशु का पूर्ण पोषण प्राप्त कर समयानुसार गर्भित होकर बच्चे को जन्म देना व पुनः निश्चित अवधि पश्चात ग्याभिन होना अच्छी प्रजनन क्षमता का घोतक है। प्रायः पाड़ी व बछड़ियों को औसतन ढ़ाई से तीन वर्ष की उम्र में ब्याना चाहिए। प्रथम ब्यांत व दूसरी ब्यांत में समयांतर 13 से 14 माह से अधिक न हों। इन उद्देश्यों को पाने के लिए पशुपालक के ध्यान में लाए जाने वाले बिंदू :

1. कुपोषण से ग्रस्त पशु पूर्ण क्षमता से उत्पादन नहीं दे पाता तथा प्रायः अधिक उम्र में गर्भधारण करता है। अतः पशुओं को प्रोटीन, वसा कार्बोहाईड्रेट के साथ साथ विटामिन–ए, फास्फोरस, लौह तत्व, आयोडीन, जिंक आदि लवण व विटामिन युक्त आहार देना चाहिए।
2. पशुओं में अण्डाशय, अंडनाल का बंद होना, बच्चेदानी का मुंह बंद होना, असक्रिय अण्डाशय तथा योनी में लगातार यौन्यातर का रहना आदि पैतृक विकारों की जांच समय रहते ही करवा लेनी चाहिए।
3. पशु का गर्मी में न आना या अधिक समय तक गर्मी में रहना तथा मादा पशु में नर पशु व नर पशु में मादा पशु के लक्षणों का दिखाई देना, मृत भ्रूण का पैदा होना जैसे लक्षणों पर तुरंत पशुचिकित्सक से परामर्श ले उपचार करवा लेना चाहिए।
4. बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए तथा संक्रामक रोगों का टीका समय पर लगवाना चाहिए।
5. कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षित व्यक्ति से ही करवाना चाहिए तथा प्रत्येक पशु को पोषण व प्रजनन संबधी रिकार्ड रखना चाहिए। इन बातों का ध्यान रखकर पशुपालक अधिकतम संभव उत्पादन का लाभ उठा कर विकास कर पाएंगे।

– डॉ. सोनिया शर्मा (मो. 09460890812)

निदेशक की कलम से...

गर्मियों के लिए पशु आहार चारे का संग्रहण और सरंक्षण करें

रबी फसल की पकाई और कटाई के समय हुई बेमौसम की बरसात और ओलावृष्टि राज्य के किसानों और पशुपालकों के लिए आफत बनी है। फसलों में खराबा होने से किसानों का आर्थिक नुकसान और पशुओं के आहार और चारे का उत्पादन भी प्रभावित होना लाजिमी है। इस मौसम की कृषि उपज और घास–चारे की कमी का प्रभाव आने वाली गर्मियों के अप्रेल, मई, जून, जुलाई में पड़ेगा। अतः पशु आहार और चारे के संसाधनों का न्यायोचित उपयोग और संरक्षण किए जाने की जरूरत रहेगी। पूर्व में किये गए उपायों से किल्लत के समय में पशुओं के खान–पान पर अधिक खर्च नहीं करना पड़ेगा। इसके लिए अपने पालतु पशुओं की संख्या के आधार पर आहार और चारे की खपत का पूर्वानुमान लगाना फायदेमंद रहेगा। वर्तमान खराबे के बावजूद बची हुई फसल के अवशेषों (घास–चारा) आदि का उचित संरक्षण कर लें। गर्मी के मौसम में फसलों की बिजाई के दौरान चारे की फसलों की भी प्राथमिकता से बुआई करनी चाहिए। क्योंकि कमी के समय में उचित बाजार मूल्य मिलेगा और स्वंय की आवश्यकता की भी पूर्ति हो सकेगी। हरा चारा पशु आहार का एक प्रमुख तत्व होना चाहिए। संतुलित और हरे चारे युक्त आहार देने से ही पशुधन से उत्पादन पूरा लिया जा सकता है। वैज्ञानिक विधियों के द्वारा लम्बे समय तक हरे चारे को परिरक्षित और संरक्षित किए जाने के उपाय अमल में लाए जाने चाहिए। हरे चारे के संरक्षण और चारे के परिरक्षण की अनेकों विधियां हैं जिनमें साइलेज बैग तकनीक और ''हे'' बनाना शामिल है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा हरे चारे के संरक्षण की वैज्ञानिक विधियों का प्रशिक्षण कृषकों और पशुपालकों के लिए आयोजित किए जाते हैं। ऐसे प्रशिक्षण विश्वविद्यालय परिसर सहित गांवों में भी समय–समय पर आयोजित किए जाते हैं। ऐसे निःशुल्क प्रशिक्षण शिविरों में आप भी शामिल हो सकते हैं। जिसके लिए विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय, पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र तथा बीकानेर परिसर में पशुधन चारा संसाधन, प्रबंधन तकनीकी केन्द्र और जयपुर एवं वल्लभनगर (उदयपुर) स्थित परिसर में संपर्क किया जा सकता है। **प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक** (मो.09414264997)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत अप्रैल 2015 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के.गहलोत** 9414138211 कुलपति, राजुवास	पशुधन नस्ल सुधार में वेटरनरी विश्वविद्यालय का योगदान	16.04.2015
2	**प्रो. बसन्त बैस** 9413311741 पशुधन प्रबन्धन एवं उत्पादन विभाग	जैविक पशुपालन में देशी पशु नस्लों का महत्व	02.04.2015
3	**डॉ. तारा बोथरा** 9413792663 पशुधन प्रबन्धन एवं उत्पादन विभाग	ब्रोयलर मुर्गियों का प्रबंधन एवं रख–रखाव	09.04.2015
4	**प्रो. ए. के. कटारिया** 9460073909 प्रभारी, अपेक्स सेन्टर	ग्रीष्म ऋतु में होने वाले पशु रोग एवं उनसे बचाव	23.04.2015
5	**प्रो. अन्जु चाहर** 7597741606 पशु जनपदिक रोग एवं निवारक औषध विभाग	पशुओं में थनेला रोग के कारण, लक्षण एवं उपचार	30.04.2015

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

मुस्कान !

संपादक
प्रो. त्रिभुवन शर्मा
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : अप्रैल 2015

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. त्रिभुवन शर्मा द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. त्रिभुवन शर्मा